Saathi

Date 13/05/2020

Sub - Psychology
B.A. Part I (Hons)
Paper - Ist.
Chapter - Intelligence
Topic - Evaluation of Spearman's Two Factor Theory
By - Nishikant Jaiswal (Assistant Professor)
Dr. L.K.V.D college Tajpur, Samastipur.
Lecture series No - 28

स्पीयरमैन का द्विकारक सिद्धान्त का मूल्यांकन

Evaluation of Spearman's Two Factor Theory

गुण (Merits)

I. इस सिद्धान्त का शोध-मूल्य (heuristic value) दूसरे सिद्धान्तो की तुलना में कहीं अधिक है। इस सिद्धान्त से प्रभावित होकर अनेक मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों ने बुद्धि के क्षेत्र में शोधकार्य शुरु किया एवं बुद्धि के स्वरुप (nature) तथा बुद्धि को मापने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

II. बुद्धि के स्वरुप को निर्धारित करने तथा बुद्धि-परीक्षण के निर्माण में इस सिद्धान्त को अग्रता प्राप्त है।

III. इस सिद्धान्त के आधार पर व्यक्ति के व्यवहारों या निष्पादनों के बीच समानता की व्याख्या संभव होती है। इस बात की व्याख्या स्पीयरमैन ने बुद्धि के सामान्य कारक (g-factor) के आधार पर

Scanned with CamScanner

सफलतापूर्वक की है।

(IV) इस सिद्धान्त के आलोक में व्यक्ति के व्यवहारों या निष्पादनों के बीच भिन्नता की व्याख्या भी संभव है। स्पीयरमैन ने इसकी व्याख्या विशिष्ट कारक (S-factor) के आधार पर सफलता के साथ प्रस्तुत की है।

अवगुण (Demerits)

1. थार्नडाइक (Thorndike 1926) ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा कि बुद्धि की संरचना दो तत्वों से नहीं बल्कि अनेक तत्वों से हुई है। इसी तरह थामसन (Thompson 1939) थर्स्टन (Thurstone 1943) तथा गिल्फोर्ड (Guilford 1967) ने भी इसी आधार पर स्पीयरमैन के सिद्धान्त की आलोचना की है और बुद्धि की संरचना में दो से अधिक तत्वों को माना है।

2. स्पीयरमैन ने व्यक्ति के संज्ञानात्मक कार्यों के बीच सहसम्बन्ध को ही सामान्य योग्यता या सामान्य कारक (g-factor) का आधार माना है। परन्तु उनका यह आधार बहुत कमजोर है। यही कारण है कि व्यक्ति के भिन्न-2 कार्यों के बीच सहसम्बन्ध की मात्रा बहुत कम मिलती है। आलोचकों का कहना है कि यदि सामान्य योग्यता की मात्रा सचमुच बहुत अधिक होती तो कार्यों के बीच सहसंबंध भी बहुत अधिक होता।

3. पीयर्सन ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा कि यह सिद्धान्त बहुत थोड़े प्रयोगात्मक प्रमाणों पर आधारित है। इसलिए इसे अधिक विश्वसनीय नहीं माना जा सकता है।

Saathi

Date ___/___/_____

4. एक आपत्ति यह भी उठाई गई कि कुछ मापकों या परीक्षणों के बीच अन्तःसम्बन्धों की व्याख्या केवल सामान्य कारक (g factor) के आधार पर संभव नहीं है। मापकों या परीक्षणों के बीच अन्तःसम्बंधों से पता चलता है कि सामान्य तत्व के अलावा कुछ अन्य तत्व भी है। स्पीयरमैन (1927) ने स्वयं इस बात को महसूस किया और अपने सिद्धान्त में संशोधन लाया। उन्होंने सामान्य कारक तथा विशिष्ट कारक के अतिरिक्त समूह कारकों (group factors) को स्वीकार किया। उन्होंने समूह तत्वों को मध्यवर्ती योग्यता (intermediate ability) को स्वीकार किया माना। इस संशोधन से स्पीयरमैन का सिद्धान्त काफी समग्र तथा संतोषजनक बन गया।

Scanned with CamScanner